विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी , वर्ग दशम्, विषय हिंदी

दिनांक- 16-11-20

||अध्ययन -सामग्री ||

सुप्रभात बच्चों, पृथ्वी की कक्षा से लगातार हम 'साना साना हाथ जोड़ी' पाठ को पढ़ते आ रहे हैं-

इसी संदर्भ में आज की कक्षा में इस पाठ के पृष्ठ संख्या 20 और 21 का सार प्रस्तुत है । यूमथांग की बिखरी सुंदरता का

पर्यटकों पर इतना गहरा असर हुआ कि उनके मुंह से गीत के बोल कुछ यूं फूटने लगे -सुहाना सफर और यह मौसम हसीन.......

लेकिन लेखिका इसके ठीक विपरीत बिल्कुल ही मौन हो चुकी थी उनके अंदर का हर उद्वेग पूरी तरह से शांत जैसे जीवन का सत्य उद्घाटित हो गया हो ।

लेखिका ने वहां एक अद्भुत सौंदर्य वाला जलप्रपात सेवन सिस्टर्स फॉल को देखा जिसको देखते हैं वह बिल्कुल है स्थिर और स्तंभित हो गई । उसे झरने के निरंतरता में जीवन की निरंतरता का ज्ञान हुआ ।

झरना नीचे बहती सुंदर खूबसूरत पारदर्शी तिस्ता नदी आकाश में उड़ते मंडराते बादल वहां आसपास खिले फूल सब अपनी अपनी संगीत में डूबे हुए थे ।लेखिका ने इस पूरे दृश्य का गहराई से अवलोकन किया तो उन्हें प्रतीत हुआ कि जीवन की संपूर्णता यहां है ।

इस गतिशीलता में उन्हें जीवन के सच्चे
आनंद की अनुभूति हुई ।
कहने का तात्पर्य यह है कि लेखिका जीवन
की तत्वज्ञान को इस सौंदर्य में पा चुकी थी ।

आज पढ़ने के लिए आपको इस पाठ के 22
और 23 पृष्ठ संख्या को दिया जा रहा है ।
आप इसे ध्यान पूर्वक पढ़ें ।

पाठ के पठित अंश के आधार पर यह
सिद्ध करें कि लेखिका इस यात्रा के दौरान
आध्यात्मिक परिवर्तन हो चुका था ।

चुहलबाज़ी के अंदाज़ में बताया जिन रास्तों से गुज़रते हुए आप हिम-शिखरों से टक्कर लेने जा रही हैं उन्हीं रास्तों को ये पहाड़िनें चौड़ा बना रही हैं।"

"बड़ा खतरनाक कार्य होगा यह" मेरे मुँह से अकस्मात निकला। वह संजीदा हो गया। कहने लगा, पिछले महीने तो एक की जान भी चली गई थी। बड़ा दुसाध्य कार्य है पहाड़ों पर रास्ता बनाना। पहले डाइनामाइट से चट्टानों को उड़ा दिया जाता है। फिर बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़-मोड़कर एक आकार के छोटे-छोटे पत्थरों में बदला जाता है, फिर बड़े-से जाले में उन्हें लंबी पट्टी की तरह बिठाकर कटे रास्तों पर बाड़े की तरह लगाया जाता है। ज़रा-सी चूक और सीधा पाताल प्रवेश!

और तभी मुझे ध्यान आया...इन्हीं रास्तों पर एक जगह सिक्किम सरकार का बोर्ड लगा था जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, "एवर वंडर्ड हू डिफाइड डेथ टू बिल्ड दीज रोड्स।" (आप ताज्जुब करेंगे पर इन रास्तों को बनाने में लोगों ने मौत को झुठलाया है।)

एकाएक मेरा मानसिक चैनल बदला। मन पीछे घूम गया। इसी प्रकार एक बार पलामू और गुमला के जंगलों में देखा था...पीठ पर बच्चे को कपड़े से बाँधकर पत्तों की तलाश में वन-वन डोलती आदिवासी युवतियाँ। उन आदिवासी युवतियों के फूले हुए पाँव और

इन पत्थर तोड़ती पहाड़िनों के हाथों में पड़े ठाठे[16], एक ही कहानी कह रहे थे कि आम ज़िंदगियों की कहानी हर जगह एक-सी है कि सारी मलाई एक तरफ़; सारे आँसू, अभाव, यातना और वंचना एक तरफ़!

और तभी मेरी सहयात्री मणि और जितेन मुझे खोजते-खोजते वहाँ तक आ गए थे। मुझे गमगीन देख जितेन कहने लगा, "मैडम, ये मेरे देश की आम जनता है, इन्हें तो आप कहीं भी देख लेंगी...आप इन्हें नहीं, पहाड़ों की सुंदरता को देखिए...जिसके लिए आप इतने पैसे खर्च करके आई हैं।"

'ये देश की आम जनता ही नहीं, जीवन का प्रति संतुलन भी हैं। ये 'वेस्ट एट रिपेईंग'[17] हैं। कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं', मन ही मन सोचा मैंने। हम वापस जीप की ओर मुड़ने लगे कि तभी मैंने देखा—वे श्रम-सुंदरियाँ किसी बात पर इस कदर खिलखिलाकर हँस पड़ी थीं कि जीवन लहरा उठा था और वह सारा खंडहर ताजमहल बन गया था।

× × × ×

हम लगातार ऊँचाईयों पर चढ़ते जा रहे थे। जितेन बता रहा था, अब हम हर मोड़ पर हेयर पिन बेंट लेंगे और तेज़ी से ऊँचाई पर चढ़ते जाएँगे। हेयर पिन बेंट के ठीक पहले एक पड़ाव पर देखा सात-आठ वर्ष की उम्र के ढेर सारे पहाड़ी बच्चे स्कूल से लौट रहे थे और हमसे लिफ्ट माँग रहे थे। जितेन ने बताया हर दिन तीन-साढ़े तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़ाई चढ़कर ये बच्चे स्कूल जाते हैं।

"क्या स्कूली बस नहीं?"

मणि के पूछने पर जितेन हँस पड़ा, "मैडम यह मैदानी नहीं पहाड़ी इलाका है। मैदान की तरह यहाँ कोई भी आपको चिकना वर्बीला[18] नहीं मिलेगा। यहाँ जीवन कठोर है। नीचे तराई में ले-देकर एक ही स्कूल है। दूर-दूर से बच्चे उसी स्कूल में जाते हैं। और सिर्फ़ पढ़ते ही नहीं हैं, इनमें से अधिकांश बच्चे शाम के समय अपनी माँओं के साथ मवेशियों को चराते हैं, पानी भरते हैं, जंगल से लकड़ियों के भारी-भारी गट्ठर ढोते हैं। खुद मैंने भी ढोए थे।"

खतरा अब धीरे-धीरे बढ़ने लगा था। रास्ते और भी सँकरे होते जा रहे थे। कई बार लगता जैसे रास्तों को इंच टेप से नापकर एक जीप जितना ही चौड़ा बनाया गया है कि

16. हाथ में पड़ने वाली गाठें या निशान 17. कम लेना और ज्यादा देना 18. बढ़े हुए पेट वा